आपातकाल में सृजन फुलवारी

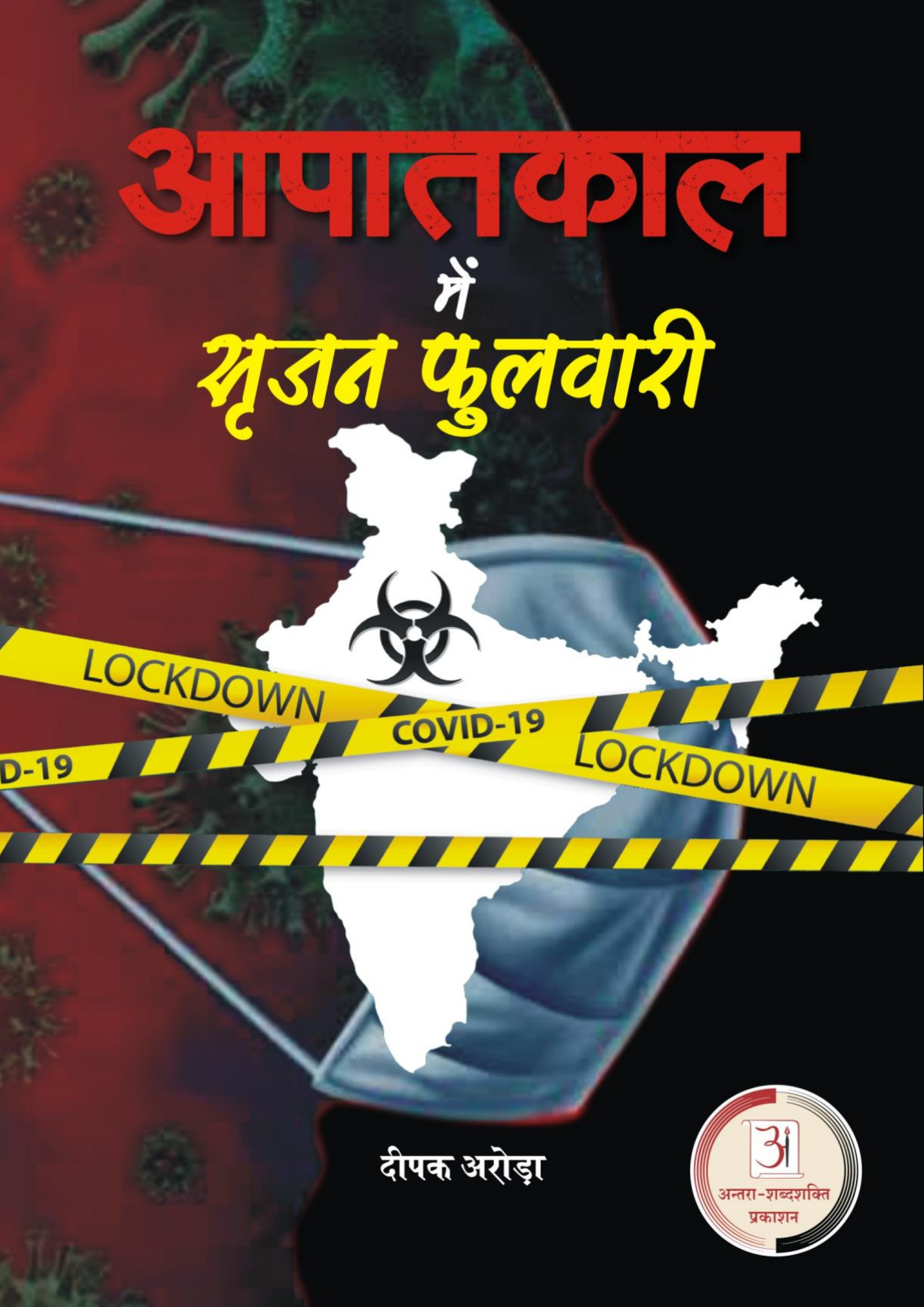

दीपक अरोड़ा

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

दीपक अरोड़ा

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-197-8

संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी

मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331

दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159

मोबाईल- 9424765259

ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com

वेबसाईट- www.antrashabdshakti

प्रथम संस्करण - 2020, दीपक अरोड़ा

मूल्य- 50.00 रूपये

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY DEEPAK ARORA

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यादवन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	रात भर	6
2.	औकात	7
3.	गंगा लुट रही है	8
4.	तो कोई बात हो	9
5.	याद	10
6.	ममता की छाया	11
7.	मैं चुप हूं	12
8.	बदलाव	13
9.	गुटके का जहर	14
10.	हिज्र	15
11.	कर्म	16
12.	मुलाकातें	17
13.	दोस्ती	18
14.	अब हम क्या करें	19
15.	अहमियत	20
16.	कोरोना भगावो	21

रात भर

याद में तेरी हर पल गुजारा इस तरह,
कि लब पे हिचकियां आती रहीं रात भर।

हिज्र में तेरी दम ही न निकला हमारा,
वैसे सिसकियां आती रहीं रात भर।

बहुत कोशिश की निद्रा में लीन हो जाएं,
मगर यादें इसी तरह तड़पाती रहीं रात भर।

एकटक तारों को निहारते-निहारते 'दीपक'
आंखें आंसुओं से तकिया भिगाती रहीं रात भर

औकात

ए जिंदगी, तेरी क्या औकात है,
बस, इक सांस की ही तो बात है।

मुसीबतें तो आएंगी, मगर डरने का नई,
ये तो फकत जैसे शतरंज की बिसात है।

हिम्मत गर हो, मजबूत जिगर हो,
तो गुजर जाएगी, ये जो जालिम रात है।

इस उधार की जिंदगी को हंस के गुजारो
ये तो बस, खुदा की दी हुई खैरात है।

देख लो कोरोना का कहर, सब पर है बरपा,
उसके लिए न कोई धर्म, न जात-पात है।

इस दुश्मन को हम हिम्मत और हौसले से हराएंगे,
होगा मुमकिन ये 'दीपक', गर हम साथ-साथ है।

गंगा लुट रही है

किस्सा हरिद्वार का है,
एक गरीब परिवार का है।

जिसका पति है शराबी,
क्या बताऊं उस औरत का हाल,
जिसके बच्चों को दूध तो क्या,
दो वक्त की रोटी भी नसीब नहीं होती।

बच्चों को क्या मालूम,
कि उनकी मां को भूखे भेडिय़े नोच लेते हैं,
और बदले में दो टूक चारा फेंक देते हैं।
बच्चे बड़े हो रहे हैं,
मां उनके पालन-पोषण में जुट रही है।

कौन कहता है कि गंगा पवित्र है,
वो तो हरिद्वार में भी लुट रही है।
'दीपक' आप और कितनी कविताएं बनाएंगे,
औरत पर होते जुल्म को कैसे रोक पाएंगे।

तो कोई बात हो

इस उधार की जिंदगी में गम के सिवा कुछ नहीं,
तुम गर हंसी होठों पे ला दो तो कोई बात हो।

फूलों की सेज पे चलते देखा है मैने लोगों को,
तुम $गर कांटों पर चल कर दिखा दो तो कोई बात हो।

ये जिंदगी उलझनों से भरी है इस कदर के जीना है मुश्किल,
तुम गर जिंदगी की इस उलझन को सुलझा दो तो कोई बात हो।

सोच-समझ कर, तोल-तोल कर बात को जुबां से निकालते हैं,
तुम गर 'दीपक' को बोलना सिखा दो तो कोई बात हो।

याद

यूं तेरी याद में बेसाख्ता आंसू निकले,
जिस तरह दिल फूल का चीरकर खुश्बू निकले।

मजा तो तब है बहार का, आए तो ऐसी आए,
तब फूल तो फूल, कांटों से भी खुश्बू निकले।

अब तो रुक जाते हैं, ये सोचकर हर मोड़ के बाद,
जाने किस मोड़ पर से, ए चांद तू निकले।

कैसा मंजर होगा, सोच के पुलकित होता हूं,
'दीपक' देखे तस्वीर तेरी और तू रूबरू निकले।

ममता की छाया

तेरी ममता की छाया में धन्य ये संसार
सागर से गहरा पर्वत से उंचा है मां तेरा दुलार

करूणा स्नेह का तू इक जलता दीया ओ मां
धन्य हुई तेरे जन्म को पाकर ये धरा ओ मां
करोड़ों ने पाया तुझमें दर्शन ईश्वर का
सागर से गहरा पर्वत से उंचा है मां तेरा दुलार
तेरी ममता की छाया में धन्य ये संसार

पथ के बेसहारे बच्चों को दिया दुलार
रोगी जिसका कोई नहीं उसे तूने दिया है प्यार
तेरी श्रद्धा और सेवा में दर्शन जीवन का
सागर से गहरा पर्वत से उंचा है मां तेरा दुलार
तेरी ममता की छाया में धन्य ये संसार

मैं चुप हूं

सुनो!
मैं चुप हूं
इसका मतलब यह नहीं
कि मुझे दर्द नहीं होता
आज भी टीस उठती है
तुम्हारी जफा को याद करके
पर मैं बोलता नहीं
दर्द को पी लेता हूं
धीरे-धीरे
जैसे मेरी वफा का
सिला दिया तुमने
अपनी जफा से
धीरे-धीरे
हां, मैं चुप हूं..

बदलाव

सुनो!
मौसम का बदलना
कभी-कभी
अच्छा लगता है,
लेकिन
तुम्हारा
मौसम की तरह
बदल जाना
अच्छा नहीं लगता।

गुटके का जहर

दिल्ली में एक ऑटो वाला
अपनी थूक के साथ
चलता जा रहा था
गुटका खा-खाकर
वो शरीर में
धीमा जहर
भरता जा रहा था
और मोदी के
स्वच्छता अभियान की सड़क पर
धज्जियां उडा रहा था
ये थूक कभी
मरवा देगा उसे
गुटके का जहर
जला देगा उसे
मैं और दी हैरान थे
कुछ कुछ परेशान थे
क्या अपने देश का बंदा
बिना थूक का साथ लिये
दो कदम भी चल पाएगा!

हिज्र

सुनो!
ये दूरियां तुम्हारी
तड़पाती हैं...
हिज्र के हर पल में
बहुत सताती हैं...
क्या होता है
तुम्हारे साथ भी ऐसा
होता है मेरा हाल
तुम्हारे हिज्र में जैसा...

कर्म

सुनो!
कर्म किया था
मैंने भी
कर्म किया था
उसने भी
फल मिला था
मुझे भी
फल मिला था
उसे भी
मैंने कर्म किया
वफा का
उसने कर्म किया
जफा का
उसे मिली
जिंदगी
मुझे मिली
कज़ा
पता नहीं
कर्म
उसका अच्छा था या मेरा !

मुलाकातें

भुला न पाओगे सनम,
हमसे हुई मुलाकातों को,

जितना दूर जाओगे,
उतना ही करीब पाओगे हमें।

'दीपक' यादों के भंवर में,
डूब जाओगे इस कदर,

उतना ही खुद तड़पोगे,
जितना तड़पाओगे हमें।

दोस्ती

कोई इच्छा नहीं
दोस्ती निभाने की दिल में,
क्योंकि दोस्ती है कहां,
फकत निशां बाकी हैं दोस्तों।

वासना के आगोश में खो गई
दोस्ती की कहानी,
वो भूले बिसरे दोस्ती के,
समां बाकी हैं दोस्तों।

'दीपक' कहता है बचा लो
दामन अपना हैवानों से,
लूट लिया बहुतों को,
अभी जहां बाकी है दोस्तों।

अब हम क्या करें

हो गई हैं उनसे आंखें चार, अब हम क्या करें,
ली है उनकी कसम यार, अब हम क्या करें।

मुलाकात कब होगी, सोचकर गुजर जाता है दिन,
बातें करेंगे सनम से हजार, अब हम क्या करें।

रफ्ता-रफ्ता हद से गुजर जाएंगे उनके प्यार में,
कल का लेकिन क्या पता यार, अब हम क्या करें।

होश है कहां जो कुछ अक्ल वाला काम किया जाये,
आज दिल है बड़ा बेकरार, अब हम क्या करें।

पहले तो ऐसा हाल न था, नींद आती थी चैन से,
'दीपक' कोई ले उड़ा चैन यार, अब हम क्या करें।

अहमियत

आज जाना क्या अहमियत है इंतजार की,
क्या यहीं से शुरूआत होती है प्यार की।

कभी अंदर तो कभी बाहर, आना-जाना लगा रहा,
राह देख रही थीं आंखें, अपने दिलबर यार की।

वक्त जैसे थमने सा लगा है जिंदगी की तरह,
क्या यही सजा होती है एकतरफा प्यार की।

आंखें भी थकने सी लगी हैं अब 'दीपक'
कब आएगी आखिर वो घड़ी इजहार की।

कोरोना भगावो

हाथ न मिलावो, नमस्ते बुलावो,
देश से अपने कोरोना भगावो।
सेनेटाइजर लावो, हाथों पे लगावो,
देश से अपने कोरोना भगावो।

आप मेरे पास न आओ जी,
एक मीटर दूर जाओ जी।
थोड़ी म्हारी बिनती मानो जी,
बाहर निकलने की न ठानो जी।
मास्क लगावो, जिंदगी बचावो
देश से अपने कोरोना भगावो

उनको सलाम करो,
देश के नाम करो,
जिन्होने ड्यूटी है अपनी निभाई।
कर्तव्य पर हैं अपने डटे,
कदम न पीछे हटे,
उनकी महिमा 'दीपक' ने है गाई।

खुद समझो, दूसरों को समझावो
देश से अपने कोरोना भगावो।

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

रचनाकार

दीपक अरोड़ा

मकान नं.४५ वार्ड नं.१६ (न्यू),
कारगिल पार्क के पास,
पुरानी आबादी, श्रीगंगानगर (राजस्थान)
पिन-३३५००१

Email- anjummazine@gmail.com

Mobile - 9414236143

पत्रकारिता और फोटोग्राफी मेरे कार्यक्षेत्र रहे हैं जिनके चलते अनेक साहित्यक आयोजनों में मेरा जाना होता रहा तो लेखनी स्वतः ही समाचारों के साथ-साथ साहित्य में भी चलने लगी। श्रीगंगानगर में मासिक पत्रिका अंजुम भी निकालता हूँ। डॉ. प्रीति से मेरा काफी पुराना परिचय है मैं उनके समूह अन्तरा शब्दशक्ति का सदस्य भी हूँ। लगातार साहित्य के लिए समर्पित अन्तरा शब्दशक्ति समूह ने लॉकडाउन जैसे आपातकाल में सृजन को बढ़ावा देने के लिए कोई सरप्राइज देने के लिए सभी रचनाकारों से कुछ रचनाएँ मंगवाई हैं जो मित्र के आग्रह पर भेजी। आपातकाल में सृजन के लिए मिलने वाले इस अज्ञात उपहार की प्रतीक्षा है। हार्दिक शुभकामनाएं अन्तरा शब्दशक्ति परिवार।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क- 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-197-8

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/